P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-III October-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

''समकालीन कविता और प्रतीक विधान''

अशोक चौहान
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति शास्त्र विभाग,
शासकीय महाविद्यालय
जुन्नारदेव,
छिन्दवाड़ा (म.प्र)

सारांश

समकालीन कविता में ध्वन्यात्मक शब्द–शक्तियां मूल में रहने के कारण प्रतीक–योजना शिल्प पक्ष का एक अनिवार्य तत्व बनकर उपस्थित होता है, यह एक कलात्मक युक्ति है। जिसे कवि अपनी सूक्ष्म अनुभूतियों की सफलता पूर्वक एवं संश्लिष्ट व्यंजना के लिये उपयोग करता है। कुछ प्रतीक ऐसे भी है जिनके विभिन्न संदर्भो में किंचित अर्थ बदले है और कुछ परम्परागत अर्थो से सर्वथा भिन्न अपना मौलिक अर्थ भी लिए हुए है। समकालीन कविता माधुर्यपूर्ण भावनाओं का प्रतीक है। अनेक प्रतीक प्राकृतिक जगत से संचायित है। और ये स्वयं अपने गुण, धर्म, प्रकृति आदि के द्वारा उपयोग का बोध कराने में समर्थ है जीवन प्रवाह और बहते जल की तरह प्रतीकों की निरंतरता तमाम दबावों और अमानवीय होती स्थितियों के बीच बनी है और बनी रहेगी संवेदन शून्य और विकट समय में प्रतीकों की जरूरत और अधिक होगी। समकालीन कविता का इतिहास, विषय, भाषा–शैली, एवं विधाओं में सुसंपन्न है और आज भी वह नये प्रतीक विधानों के साथ विकास के पथ पर अग्रसर है।

मुख्य शब्द : स्वच्छंदतावादी, भ्रष्टाचार, सांस्कृतिक संकट।

प्रस्तावना

प्रतीक प्रेषणीय शक्ति के भी संवर्द्धक एवं उसके प्रभाव को स्थायित्व प्रदान करने वाले होते है। समकालीन कविता में इनका प्रयोग विशुद्ध प्रतीक धरातल पर न होकर प्रायः उपमान–योजना के रूप में अधिक किया गया है समकालीन कविता में प्रतीक विधान केवल अप्रस्तुत रूप में न होकर पात्रों, दृष्य और घटनाओं तक के व्यापक स्तर पर प्रयुक्त हुआ है। ये प्रतीक स्वच्छंदतावादी कल्पना वैभव के योग से सर्वथा नये परिवेश और नयी अर्थ–दीप्ति के साथ प्रस्तुत हुये है। वही कुछ परम्परा से ग्रहीत प्रतीक है।

समकालीन कविता में कई रचनाकारों ने प्रतीक को प्रकृति के कोमल, सुन्दरतम् पदार्थो को ही अपनी भावाभिव्यसंजना का साधन बनाया है, अतः एक बार समझ लेने पर फिर उनके शब्दार्थ–सम्बन्ध में कोई क्लिष्टता नहीं रह जाती। कुछ प्रतीक ऐसे भी है जिनके विभिन्न संदर्भो में किंचित अर्थ बदले है और कुछ परम्परागत अर्थो से सर्वथा भिन्न अपना मौलिक अर्थ भी लिए हुए है। ''समकालीन कविता की भाव–स्फीति और अमित सौन्दर्य संवर्धना में प्रतीक विधान का निष्चित ही महत्वपूर्ण याग रहा है।''[1]

समकालीन कविता प्रतीक योजना में नया वाक्य विन्यास और नवीन शैली है नवीन प्रतीकों की भंगिमा स्पृहणीय है आभ्यंतर वर्णन में सर्वथा उपयुक्त है।''प्रतीक विन्यास पर चढ़े पानी ने नूतन तथ्य उत्पन्न करके सूक्ष्म भावाभि–व्यंजना की अर्थगा खोल दी है।[2] लाक्षणिकता ध्वन्यात्मकता सौन्दर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार वृक्ता समकालीन कविता के नित्य गुण है।

समकालीन कविता माधुर्यपूर्ण भावनाओं का प्रतीक है। अनेक प्रतीक प्राकृतिक जगत से संचायित है। और ये स्वयं अपने गुण, धर्म, प्रकृति आदि के द्वारा उपयोग का बोध कराने में समर्थ है समकालीन कविता यंत्र गतिक नहीं युग के नवोन्मेषों का अनिवार्य प्रतिफलन है।

समकालीन कविता में जहां एक ओर प्रतीक विधान प्रकृति की गोद में संपन्न होते है यथा आलम्बन उद्दीपन, भावावृत्त, रहस्यदर्शन उपदेश, भूसिका अलंकार मानवीकरण आदि समग्र कलेवर प्राकृतिक श्री–सुषमा से युक्त है वहीं दूसरी ओर सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, मानविकी शोषक–षोषित वर्ग, गरीबी, भ्रष्टाचार, लोकतंत्र आदि पर प्रतीक विधान नये कलेवर में प्रस्फुटित हो रहा है। समकालीन कविता में रचनाकारों ने सौन्दर्य चित्रण आदि में बौद्धिक प्रयत्नों द्वारा अर्जित प्रदार्थो को प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया है। ये बौद्धिक प्रयत्न वर्ग विभाजन, सामाजिक संघर्ष तथा शासक शासित में भेद डालने वाली व्यवस्थापिका के रूप में प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत हुये है।

समकालीन कविता में नयी जीवन शक्ति मूल विशेषता रही है। भावजगत में स्वच्छन्द तथा नवीन भावनाओं को सर्वत्र महत्व दिया है।

''समकालीन कविता ने सामान्य जन–मानस और स्थितियों पर प्रतीक विधान की प्रासंगिकता को अर्थवत्ता देकर अधिक प्रासंगिक और सम्प्रेषणीय बना दिया है इस दौर में अनेक रचनाकार अपनी जीवंतता के साथ सक्रिय है और आज भी दिशा देने में समर्थ है।''[3]

जीवन प्रवाह और बहते जल की तरह प्रतीकों की निरंतरता तमाम दबावों और अमानवीय होती स्थितियों के बीच बनी है और बनी रहेगी संवेदन शून्य और विकट समय में प्रतीकों की जरूरत और अधिक होगी। परिवेश और जीवन व्यापार की छोटी–छोटी गतिविधियों से रिष्ता कायम करते हुये प्रतीकों की अर्थवत्ता और उसकी प्रासंगिकता को महसूस किया जा रहा है। अकालग्रस्त जीवन के अछूते चित्र, घर परिवार की छबिया, नाते–रिश्ते, स्मृतियाँ और सभी अपने समय के आतंक के दबावों के बीच हार्दिक रूप से समकालीन कविता में प्रतीक विधान के साथ परिलक्षित हो रहे है।

समाज में उत्पन्न सांस्कृतिक संकट, साम्प्रदायिक वैमनस्य और सभी क्षेत्रों में हुई नैतिक गिरावट को अनदेखा नही किया जा रहा है। इससे रचनाकारों का फलक विस्तृत हुआ है।

समकालीन कविता में प्रतीक विधान के साथ संभावनाओं से भरी युवतर कवियों की पीढ़ी है जिनकी रचनाओं की ताजगी और सफल जीवन को परखने की दृष्टि सहज की आकर्षित करती है। समकालीन कविता का इतिहास, विषय, भाषा–शैली, एवं विधाओं में सुसंपन्न है और आज भी वह नये प्रतीक विधानों के साथ विकास के पथ पर अग्रसर है।

समकालीन कविता की प्रतीक योजना अत्यन्त समृद्ध और फलक न केवल विस्तृत है बल्कि कविताओं में चुनौती देने, प्रश्न करने और प्रच्छन्न सत्य को प्रस्फुटित करने का विवेक साहस और सामर्थ्य भी है।

संदर्भ सूची

1. युग कवित प्रसाद – डॉ. गणेश खरे, प्रथम प्रकाशन रामबाग कानपुर पृ. 69
2. हिन्दी काव्य धारा – डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, विद्या प्रकाशन कानपुर, पृ. 48
3. समकालीन काव्य : एक अनुशीलन – डॉ. नागर, वाणी प्रकाशन पृ. 87
4. खरे, डॉ.गणेश ,युग कविता प्रसाद,प्रथम प्रकाशन रामबाग, कानपुर पृ.69
5. पाण्डेय, डॉ.लक्ष्मीकांत, हिन्दी काव्य धारा,विद्या प्रकाशन, कानपुर पृ.48
6. डॉ.नागर ,समकालीन काव्यः एक अनुशीलन, वाणी प्रकाशन,कानपुर पृ.87